RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 19 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 13 अक्टूबर 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

पहाड़ फिर वहीं लेकिन सवालों का सैलाब कि सब गोटी फिट कर रहे हैं

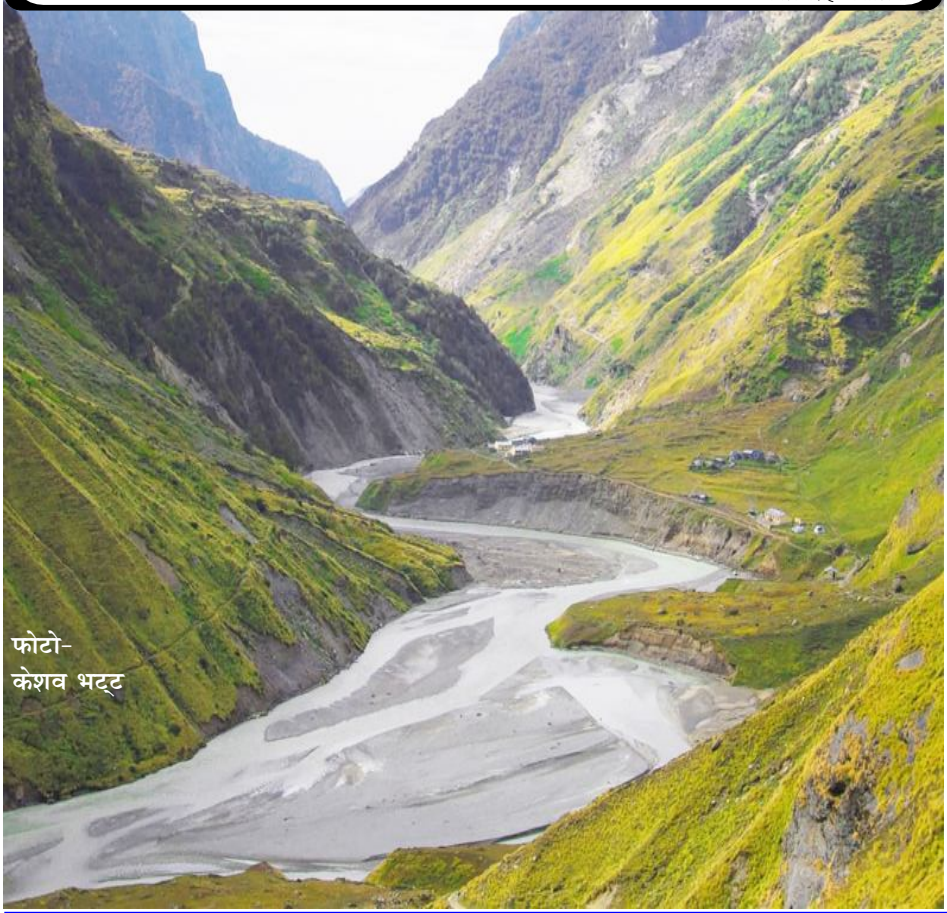

फोटो-
केशव भट्ट

कार्यालय प्रतिनिधि

रामलीला का त्यौहार के उत्साह के बाद अब दीपावली की तैयारी है। आपदा की चोट सहने के बाद भी उत्तराखण्ड ने अपने तीज त्यौहारों को करीने से बचा रखा है और कोशिश है कि ग्राम स्तर पर वह परम्पराएं हमेशा रहें। इसके पीछे धार्मिक आस्था और लोक व्यवहार भी है। अपने प्रतिनिधि त्यौहारों के साथ-साथ स्थानीय मेलों व होने वाले उत्सवों का दौर इन दिनों भी जारी है लेकिन 'राजनीति' के खेल ने जो करवट ली है उसमें नेताओं का हस्तक्षेप ज्यादा होने लगा है। सामाजिक कार्यकर्ताओं का आगे आना तो समझ में आता है लेकिन राजनीति से प्रेरित जब किसी भी आयोजन में लबरेज होकर अपना मूल पाठ करता है तो वह आम जनता को मुंह चिढ़ाने से ज्यादा कुछ नहीं है।

उत्तराखण्ड में इन दिनों आपदा (शेष अन्तिम पृष्ठ पर)

भारत के मीलपत्थर

विदुर की वाणी में कृष्ण जैसा तेज था

सूर्यकान्त बाली

महाभारत के अद्भुत कर्मशील और तनाव से भरे माहौल में विदुर का स्थान कहाँ आता है? विदुर को समझने के लिए उन्हें दो तरह से तुलना के पात्र बना सकते हैं, सिर्फ इसलिए कि तुलना समझने में सहायता करती है। अपनी जन्मकथा के कारण विदुर पाण्डु और धृतराष्ट्र के पाले में चले जाते हैं तो अपनी प्रतिभा और कर्मशीलता के कारण विदुर की तुलना कृष्ण के अलावा और किसी से की ही नहीं जा सकती। पहले जन्मकथा की बात की जाए।

विचित्रवीर्य की मृत्यु के पश्चात कुरुकुल के सामने वंशनाश का खतरा पैदा हो गया था। इस खतरे से वंश को बचाने के लिए शान्तनु की पत्नी सत्यवती ने (पहले पति और फिर दोनों पुत्रों चित्रांगद और विचित्रवीर्य की मृत्यु के बाद) व्यास की सहायता लेने का निर्णय किया। विचित्रवीर्य की दोनों पत्नियों अम्बिका और अम्बालिका को उसने कहा कि वे नियोग द्वारा व्यास से सन्तान की प्राप्ति करें। दोनों पुत्रवधुएँ मान गईं। पर सत्यवती के मनोरथ की खण्डित पूर्ति ही हो सकी। व्यास चूँकि बहुत ही भयावह नाक-नक्श के थे, इसलिए उन्हें देखते ही अम्बिका ने आँखें बन्द कर लीं तो उसे अन्धापुत्र पैदा हुआ, जो धृतराष्ट्र कहाया। उधर व्यास को देखते ही अम्बालिका का रंग पीला पड़ गया तो उसे पीले शरीर वाला पाण्डु नामक पुत्र पैदा हुआ। जाहिर है कि सत्यवती जैसी तेजस्विनी महिला को इस तरह के विकलांग पोतों से सन्तोष नहीं हुआ तो उसने एक बार फिर से अम्बिका को व्यास से नियोग की प्रेरणा दी। इस बार अम्बिका डर के मारे व्यास गई ही नहीं और उसने अपनी एक दासी को भेज दिया, जिससे विदुर नामक पुत्र का जन्म हुआ। इस तरह नियोग सन्तति के आधार पर विदुर धृतराष्ट्र और पाण्डु के भाई हुए, पर दासी का पुत्र होने के कारण उन्हें राजकाज के लायक नहीं माना गया।

शरीर और बुद्धि दोनों दृष्टियों से विदुर अपने दोनों बड़े नियोगन भाइयों- धृतराष्ट्र और पाण्डु से कहीं श्रेष्ठतर थे। पर धृतराष्ट्र के अन्धा होने के कारण जब उसे राजा बनने के अयोग्य माना गया तो विवश पीले शरीर वाले पाण्डु को राजा बनाया गया और शारीरिक दृष्टि से सर्वांग सुन्दर और स्वस्थ्य विदुर की तरफ किसी की निगाह तक नहीं गई। अगर विकलांग होने के कारण धृतराष्ट्र अक्षम था तो पाण्डु होने के कारण पाण्डु को भी अयोग्य मान तीसरे भाई विदुर को राजा बना देना चाहिए था। शरीर ही नहीं, बुद्धि की दृष्टि से भी विदुर राजा बन सकते थे। पर उन्हें नहीं बनाया गया। क्यों? उत्तर आसान नहीं।

उत्तर आसान इसलिए इसलिए नहीं क्योंकि अपने दोनों भाइयों के सामन विदुर भी व्यास के बल से ही पैदा हुए थे, पर उन्हें कुलीनता की वैसी मान्यता नहीं मिली। तर्क दिया जाता है कि उनकी माता चूँकि दासी थी, इसलिए विदुर को कुलीनता का वह प्रमाण पत्र नहीं मिल पाया, जो उनके दूसरे दोनों भाइयों को मिला। तो क्या इससे यह निष्कर्ष निकाल लिया जाए कि महाभारत काल में वंश निर्धारण में पिता के साथ माँ की भूमिका का अगर ज्यादा नहीं तो बराबर का महत्व था? शायद इसलिए युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन पाण्डव (पाण्डु पुत्र) होने के साथ कौन्तेय (कुन्ती पुत्र)भी कहलाए तो कृष्ण को वासुदेव (वसुदेव पुत्र) के साथ देवकीनन्दन और यशोदा नन्दन भी कहा गया। पर यदि माँ का नाम इतना ही निर्णायक था तो धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों के नाम में उनकी माँ गान्धारी का नाम क्यों नहीं लोकप्रिय हो पाया? सचमुच इन प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल पाते और इन्हीं अनुत्तरित प्रश्नों के बीच एक महामति विदुर इसलिए युवराज नहीं बन पाए, क्योंकि उनकी माँ दासी थी और पूरी महाभारत में वे क्षत्ता कहलाए, जो उनकी जाति वाची नाम था, जिसका अर्थ है- चँवर डुलाने वाला। कितनी विडम्बना है कि धृतराष्ट्र और पाण्डु के नियोगन भाई होने के बावजूद वे उनके बजाए कर्ण के पाले में डाल दिए गए, क्योंकि महाभारत कथा में विदुर के अलावा कर्ण ही ऐसे दूसरे पात्र हैं, जो पाण्डवों के भाई होने के बावजूद सूत यानी सारथी के हाथों पलने-पुसने के कारण हीन जाति के मान लिए गए और इस कष्ट को आजीवन झेलते रहे।

पर जाति के कारण किनारे कर दिए जाने के बावजूद अपनी प्रतिभा, वाक्पटुता और कर्मशीलता के कारण विदुर कृष्ण के पाले में खड़े नजर आये हैं। महाभारत कथा का शायद ही कोई महत्वपूर्ण प्रसंग हो, जहाँ विदुर उपस्थित न हों और अपनी राजनीतिक राय उन्होंने न दी हो। भीष्म जैसे राजनीति शास्त्र के परमज्ञानी पितामह के मौजूद रहते भी महाराज धृतराष्ट्र ने विदुर को ही अपना मन्त्री बनाया था। इससे कौरवराज को दो फायदे हो गए। एक यह कि विदुर जैसे व्यक्ति से धृतराष्ट्र को सदा एक निष्पक्ष और उचित राय मिलती रहती और दूसरा यह कि आयु में छोटा भाई होने के

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

पं.छन्नूलाल मिश्र आम जन तक संगीत की भाषा को समझाते रहे

भारतीय शास्त्रीय संगीत के वटवृक्ष पद्मभूषण पं. छन्नूलाल मिश्र दो अक्टूबर को चिरनिद्रा में चले गये। तीन अगस्त 1936 को आजमगढ़ के हरिहरपुर गाँव में जन्मे छन्नूलाल आम जन तक संगीत बनकर प्रवाहित हुए। पिता बद्री प्रसाद व किराना घराने के उस्ताद अब्दुल गली खाँ से संगीत की शिक्षा लेने वाले पंडित जी बनारस घराने की गायकी विशेषकर ख्याल व ठुमरी के लिये प्रसिद्ध थे। वे काशी की धरोहर तो थे ही, जन-जन तक संगीत को उलट-पुलट कर समझाने में दक्ष भी थे। स्पिक मैके के मंच के तहत उत्तराखण्ड में कई बार उनका आना और संगीत की बारीकियों से युवाओं को अवगत कराना सबको याद है।

छन्नू लाल मिश्र बताते थे कि शास्त्रीय और लोक के संगीत में कितनी समानता है और किस प्रकार वह हर किसी को जोड़ने वाली विद्या है। वह वर्तमान के चकाचौंध में उलझी युवा पीढ़ी को सचेत करते थे कि संगीत और गीत-संगीत के नाम पर जितना कुछ थिरका जा रहा है वह सब क्षणिक है। इस क्षणिक तमाशे के लिये जितना बड़ा दिखावा किया जा रहा है वह तत्काल समझ नहीं आ सकता। जबकि सच्चे सुरों का घोल आत्मकेन्द्रित करता है और अपने को समझने में मदद करता है। पण्डित जी ख्याल गायकी, ठुमरी, टप्पा, दादरा, भजन व गीतों के उदाहरण देकर समझाते कि लोक से उठे स्वर-ताल केवल मनोरंजन नहीं बल्कि साधना हैं।

पूरब अंग की ठुमरी के सधे सुर लगाने वाले छन्नू लाल जी संगीत को जन-जन तक पहुँचाने का अभियान इसलिये चलाते रहे ताकि गीत-संगीत के नाम पर युवाओं के आगे परोसा जा रहा ग्लैमर और संगीत साधना के अन्तर को समझा जा सके। पंडित जी अपने राग छेड़ कर दुनिया से मुक्त हो चुके हैं लेकिन उनकी साधना की चिंगारी साधकों के रूप में हमेशा रहेगी।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

महाराष्ट्र के स्कूल को ब्रिटेन में अवॉर्ड

लन्दन। महाराष्ट्र के खेड़ तालुका स्थित प्राथमिक जिला परिषद प्राथमिक स्कूल, जलिंदरनगर को इस सप्ताह लन्दन में सर्वश्रेष्ठ स्कूल की श्रेणी में दिये जाने वाले '2025 वर्ल्ड्स बेस्ट स्कूल प्राइज कम्युनिटी च्वॉइस अवार्ड' का विजेता घोषित किया गया।

फिलीपीन में भूकम्प से मलबे में फंसे हैं

मनीला। मध्य फिलीपीन के सेबू प्रान्त में आए 6.9 तीव्रता के शक्तिशाली भूकम्प में 69 लोगों की मौत हो गई। इस घटना में कई लोग घायल हो गये और कई अभी भी मलबे में दबे हैं। अभी इनकी संख्या नहीं जांची जा सकी है।

नोबल नहीं मिला तो अपमान : ट्रम्प

न्यूयॉर्क। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने बार फिर दोहराया है कि उन्होंने गाजा युद्ध समेत 8 संघर्षों को खत्म कराने में भूमिका निभाई है। इसके बावजूद यदि नोबेल उन्हें नहीं दिया गया तो अमेरिका के लिये बड़े अपमान की बात होगी। कहा, मैं जातना हूँ नोबेल किसी लेखक को मिलेगा। लेकिन देखते हैं क्या होता है। यह हमारे देश के लिये बड़े अपमान की बात होगी।

अलकायदा के तीन आतंकियों को उम्रकैद

राजकोट। गुजरात की एक अदालत ने पश्चिम बंगाल के तीन युवकों को देश के खिलाफ साजिश और युवाओं को कट्टपंथ की ओर उकसाने के आरोप में आजीवन कारावास की सजा सुनाई। कोर्ट ने अमर सिराज(23), अब्दुल शकूर अली शेख(20), शफनवाज अबू शाहिद(23) पर 10-10 हजार का जुर्माना भी लगाया। बताया जाता है कि इनका सम्पर्क अलकायदा से है।

57 नए केन्द्रीय विद्यालय खुलेंगे

नई दिल्ली। देश में 57 नए केन्द्रीय विद्यालय खोले जाएंगे। इससे 86000 विद्यार्थियों को लाभ होगा। पहली बार इन 57 केन्द्रीय विद्यालयों को बाल वाटिका यानी प्री-प्राइमरी के तीन वर्षों के साथ मंजूरी दी गई है। प्रधानमंत्री मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति की बैठक में सिविल क्षेत्र में इन विद्यालयों को खोलने की मंजूरी दी गई।

भारत मुझसे ट्रॉफी ले सकता है : नकवी

दुबई। एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) के अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने बीसीसीआई से माफी नहीं मांगी। नकवी ने कहा कि भारत को एशिया कप ट्रॉफी तभी मिलेगी जब भारतीय टीम सीधे उनसे आकर लेगी। इसके लिये वह तैयार हैं। भारतीय टीम ने उनसे ट्रॉफी और पदक स्वीकार करने से इनकार कर दिया था।

फसक

दाज्यू, जाँच-पड़ताल तो होते रहने वाली ठैरी

अपनी जान बचाने के लिये दूसरे की बलि ले रहे हैं बल

दाज्यू, गाँव में दो फिट गड्ढा होने के बाद से लगातार जाँच चल रही है। कैसे हुआ, किसने किया, क्यों किया, पटवारी से पूछा या डीएम से, परिवार के कितने लोग थे, खुदाई करने वाला कौन था.....। दाज्यू, विज्ञान के इस जमाने में गड्ढे खोदने और उसकी जाँच पर पूरा इलाका व्यस्त है। भगवान जाने क्या होगा इस गाँव का? दुनिया वाले बहुत सटीक रास्ते ढूंढ रहे हैं और अपना रब्बू लट्ठ लेकर जिन्दाबाद के नारे लगाते-लगाते अधेड़ हो चुका है। जाँच-पड़ताल तो होते रहने वाली ठैरी। थराली ब्लाक के जूनीधार गोठिां के जूनियर हाईस्कूल में एक छात्र की ओर से शिक्षक की गाड़ी धोने के मामले में जाँच अधिकारी बीईओ ने ग्रामीणों व बच्चों से पूछताछ की है। पूरी जाँच रिपोर्ट तैयार कर उच्चाधिकारियों को सौंपी जाएगी।

दाज्यू, जमाने की दौड़ में कब किसको पटखनी मिल जाएगी पता नहीं है। अपनी जान बचाने के लिये दूसरे की बलि ले रहे हैं बल। बबलू बता रहा है कि ईडी रायपुर 32 सौ करोड़ के आबकारी घोटाले पर बड़े एक्शन की तैयारी में है। ईडी ने 29 अधिकारियों को पूछताछ के लिए तलब किया है। इनमें वे सभी अधिकारी हैं जिन्हें पिछले महीने सुप्रीम कोर्ट ने राहत दी थी। इनमें एक महिला आईएएस के पति भी शामिल हैं। सभी अफसरों को अलग-अलग तारीखों पर बुलाया गया है बल। जिन अफसरों को समन किया गया है उनमें एक अतिरिक्त कमिश्नर, 5 उपायुक्त, 14 सहायक आयुक्त, 7 जिला आबकारी अधिकारी, 3 अन्य अधिकारी शामिल हैं। इनमें से 7 अधिकारी रिटायर हो चुके हैं। और बांकी सस्पेंड हैं।

दाज्यू, क्या हो रहा है और क्या नहीं आप जानने ही वाले ठैरे। उत्तरकाशी में पत्रकार राजीव प्रताप की मौत के मामले में डीएसपी के नेतृत्व में जाँच टीम का गठन किया गया है। लम्बित मांगों के लिए श्रीनगर में रैली निकालने वाले शिक्षकों के खिलाफ कार्रवाई की तैयारी है। शिक्षा महानिदेशालय ने अपर शिक्षा निदेशक गढ़वाल और कुमाऊँ से इन शिक्षकों का ब्यौरा तलब किया है। इन शिक्षकों के नाम, वीडियो और फोटो उपलब्ध कराने के निर्देश हैं। इसके बाद शिक्षक संघ भी भड़क गया और कहा है कि न्यायालय के नाम पर शिक्षकों को धमकाने का प्रयास किया जा रहा है। संगठन के प्रान्तीय अध्यक्ष राम सिंह चौहान और महामंत्री रमेश पैन्युली ने कहा- 'अच्छा होता शिक्षकों की लम्बित मांगों का निपटारा किया जाता।'

किस-किस को समझाएं? ऋषिकेश में एक युवक की ओर से सोशल मीडिया पर आई लव महादेव पोस्ट डालने पर दूसरे समुदाय के युवकों ने धुनाई कर दी बल। इससे आक्रोशित हिन्दू रक्षक दल कार्यकर्ताओं ने कोतवाली में नारेबाजी की। दाज्यू, कोटद्वार में अधिवक्ताओं ने एसडीएम का पुतला फूंक डाला। कोटद्वार बार एसोसिएशन एसडीएम साब की कार्यशैली से बहुत नाराज है। दाज्यू, दुनिया में सब लीला हो रही है। दून के राजपुर थानाध्यक्ष ने नशा कर वाहनों को टक्कर मारी और हंगामा हो गया।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

आपके पत्र

उत्तराखण्ड राज्य की हालत सुधार की बजाय दयनीय स्थिति में है

उत्तराखण्ड राज्य के लिए निरन्तर संघर्ष के उपरान्त 9 नवम्बर 2000 को जब उत्तर प्रदेश विभाजित होकर कुमाऊँ-गढ़वाल के 13 जिलों की पृथक उत्तराखण्ड राज्य की नींव पड़ी थी, तब यहाँ की जनता को पूर्ण उम्मीद थी कि अब पर्वतीय जनपदों का आशातीत विकास होगा। लेकिन उम्मीद के विपरीत प्रदेश की स्थिति दयनीत होती जा रही है। प्रदेश के सभी जिले 25 वर्ष व्यतीत होने पर भी जस के तस हैं। जनता द्वारा कई बार आन्दोलन करने पर नए जिलों का सृजन नहीं हो पाया है। 15 अगस्त 2011 में तत्कालीन मुख्यमंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने चार जिलों (रानीखेत, डीडीहाट, कोटद्वार व यमुनोत्री) की घोषणा की थी, वह घोषणा वास्तविक रूप नहीं ले पाई और निशंक जी मुख्य मंत्री पद से हट गए। इसके बाद यह मामला अधर में ही रहा। बाद में वर्तमान मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने नए 7 जिले बनाने का आश्वासन दिया था लेकिन यह आश्वासन भी गलत ही साबित हुआ। पता नहीं यह कोरे आश्वासन क्यों किए जाते हैं। भोली भाली जनता को गुमराह करने की कोशिश की जाती है। अब वर्तमान सरकार के केवल 2 वर्ष रह गए हैं। आगे क्या उम्मीद हो सकती है।

इसके अलावा ग्रामीण सड़कों की दशा दयनीय स्थिति में है, इस साल बादल फटने से गाँवों में बाढ़ आती है व गाँव डूब जाते हैं उसनके सुधार की कोई सुचारु व्यवस्था नहीं होती। इस प्रकार गाँवों व उनकी सड़कों की हालत खराब ही रहती है।

सरकारी विद्यालयों की दशा दिन प्रतिदिन खराब होती जा रही है। प्राथमिक विद्यालय से महाविद्यालय की खराब स्थिति बनी हुई है। पिछली सरकारों ने गाँव-गाँव में विद्यालय खोले, आज उनकी हालत खराब बनी हुई है। इसलिए नये अध्यापकों की ना तो भर्ती होती है और ना ही तैनात अध्यापकों का प्रमोशन होता है। अधिकांश अध्यापक बिना प्रमोशन पाये ही रिटायर हो जात रहे हैं इसलिये पेंशन में लाभ नहीं मिलता है। इसके विपरीत प्राइवेट स्कूलों में शिक्षा का निजीकरण करके मनमाने ढंग से इंग्लिश मीडियम विद्यालय खोले जा रहे हैं, वहाँ मनमानी फीस विद्यार्थियों से ली जा रही है, ज्यादा विद्यार्थी वहीं भर्ती हो रहे हैं। अत: ऐसे में सरकारी स्कूलों की दशा कैसे सुधरे, यह सरकारी की अदूरदर्शिता का परिणाम है।

इसके साथ ही सरकारी विद्यालयों में स्टाफ कम होता जा रहा है। स्टाफ की तैनाती कम हो रही हे। कर्मचारियों की नियुक्तियां कम की जा रही हैं या हो ही नहीं पा रही हैं और पुरान स्टाफ रिटायर हो रहा है। इसलिये या तो अधिकारी अपनी जिम्मेदारी से कार्य नहीं करते हैं और कर्मचारी लोग भी रुचि से अपने कार्य के प्रति लगाव नहीं रखते।

इसी प्रकार गाँव में कुटीर उद्योग धन्धा खेती व पशुपालन सारे व्यवसाय निरन्तर दयनीय स्थिति में है। नवयुवक बेरोजगार होकर पलायन कर रहे हैं, गाँव वीरान हो गये हैं। इसके अलावा गाँव में पीने के पानी की समस्या यथावत बनी रहती है। यहाँ पाइपलाइन में कोई देखरेख न होने से गाँव में पानी आपूर्ति नहीं हो पा रही है। इस प्रकार गाँव की स्थिति दिन प्रतिदिन दयनीय होती जा रही है। पहले इस प्रदेश के पर्वतीय जिलों में 19 विधायक थे अब वहाँ 70 विधायक होने के बावजूद गाँव के विकास की ओरकोई रुचि नहीं दिखाई दे रही है। आपसी राजनीति चलाना एवं एक दूसरे पार्टी पर टीका टिप्पणी करने में समय व्यतीत होता है। विकास के प्रति कोई ध्यान नहीं है और न ही अपने क्षेत्र का भ्रमण करते हैं तथा गाँवों में उनका कोई जनसम्पर्क नहीं होता है तो गाँव का विकास कौन पूछे। उत्तराखण्ड सरकार से अपेक्षा की जाती है कि अपने प्रदेश के विकास व उन्नति करने हेतु सार्थक प्रयास करने का कष्ट करे।

-नन्दा बल्लभ पाण्डेय
वरिष्ठ नागरिक एवं संरक्षक
गवर्नर्स पेंशनर्स वेलफेयर संगठन
ज्योलीकोट (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

अपील

चारधाम परियोजना पर पुर्नविचार किया जाए

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

चार धाम परियोजना उत्तराखण्ड के चार प्रमुख धार्मिक स्थलों बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री को सभी मौसम में कनेक्टिविटी प्रदान करने वाली एक योजना है। यह भारत सरकार की राजमार्ग परियोजना है। इस परियोजना के तहत 889 किलोमीटर का राष्ट्रीय राजमार्ग बनाने की योजना है ताकि उत्तराखण्ड के इन पवित्र स्थलों तक श्रद्धालु पूरे साल बगैर किसी रोकटोक के पहुँच सके।

आपको बता दें कि चार धाम परियोजना उत्तराखण्ड के चार प्रमुख धार्मिक स्थलों- बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री को सबी मौसम में कनेक्टिविटी प्रदान करने वाली एक योजना है। इसके कफी पहले 2022 में प्रसिद्ध पर्यावरणविद् रवि चोपड़ा ने चार धाम परियोजना पर सुप्रीम कोर्ट की उच्चाधिकार प्राप्त समिति (एचपीसी) के अध्यक्ष के रूप में इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने कहा था कि मुझे नहीं लगता है कि एचपीसी इस नाजुक (हिमालयी) पारिस्थितिकी की रक्षा कर सकता है। दरअसल 27 जनवरी 2022 को रवि चोपड़ा ने सुप्रीम कोर्ट के महासचिव को अपना त्यागपत्र सौंपा। इस त्यागपत्र में चोपड़ा ने शीर्ष अदालत के दिसम्बर 2021 के आदेश का उल्लेख किया,जिसमें एचपीसी की सिफारि ा और सितम्बर 2020 के अपने आदेश में सिफारिशों को स्वीकार किए जाने के बावजूद, सुप्रीम कोर्ट ने रक्षा जरूरतों को पूरा करने के लिए व्यापक सड़क रचना को स्वीकार कर लिया है। चोपड़ा ने पत्र में लिखा कि इस निर्णय ने एचपीसी की भूमिका को केवल दो गैर-रक्षा सड़कों की देखरेख तक सीमित कर दिया है। वहीं उन्होंने कहा कि एचपीसी द्वारा अतीत में किए गए निर्देशों और सिफारिशों को या तो अनदेखा कर दिया गया है या सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा देरी से प्रतिक्रिया दी गई है। चोपड़ा ने लिखा कि यह अनुभव इस विश्वास को प्रेरित नहीं करता है कि मंत्रालय की प्रतिक्रिया दो गैर-रक्षा सड़कों के सम्बन्ध में भी बहुत भिन्न होगी। उन्होंने लिखा कि माननीय न्यायालय ने गैर-रक्षा राजमार्गों को चौड़ा करने के लिए रिस्पांडर्स को कानूनी राहत लेने की भी अनुमति दी है। इन परिस्थितियों में, मुझे एचपीसी का नेतृत्व जारी रखने या वास्तव में इसका हिस्सा बनने का कोई उद्देश्य नहीं दिखता है। चारधाम परियोजना के लिए वन एवं वन्यजीव कानूनों के बड़े स्तर पर उल्लंघन का इशारा करते हुए सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त उच्च अधिकार प्राप्त समिति के अध्यक्ष ने केन्द्रीय पर्यावरण सचिव को भेजे पत्र में कहा था कि परियोजना के कारण हिमालयी पारिस्थितिकी को बेहिसाब और दीर्घकालिक क्षति हुई।

समिति ने केन्द्रीय पर्यावरण सचिव को भेजे गए पत्र में कहा था कि कानूनों का इस तरह से उल्लंघन किया गया जैसे कानून का शासन
मौजूद ही नहीं है। विभिन्न हिस्सों पर बिना अधिकृत मंजूरी के पेड़ों और पहाड़ियों को काटने के साथ खुदाई सामग्री निकाली गई जिससे परियोजना के कारण हिमालयी पारिस्थितिकी को बेहिसाब और दीर्घ कालिक क्षति हुई। परियोजना के पारिस्थितिक प्रभाव की जाँच करने और इसे सही करने के उपायों की सिफारिश करने के लिए इस उच्च अधिकार प्राप्त समिति का गठन किया गया था। यह भारत सरकार की राजमार्ग परियोजना है। इस परियोजना के तहत 889 किलोमीटर का राष्ट्रीय राजमार्ग बनाने की योजना है ताकि उत्तराखण्ड के इन पवित्र स्थलों तक श्रद्धालु पूरे साल बगैर किसी रोकटोक के पहुँच सके पूर्व केन्द्रीय मंत्री मुरली मनोहर जोशी ने चारधाम परियोजना के खिलाफ अपनी आवाज उठाई है। उन्होंने इस परियोजना को लेकर सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को पत्र लिखा है। साथ इस परियोजना को लेकर अपने फैसले पर पुनर्विचार करने की अपील की है। उन्होंने अपने इस पत्र में हिमाचल प्रदेश में बीते दिनों आई प्राकृतिक आपदाओं का भी जिक्र किया है। आपको बता दें मुख्य न्यायाधीश को जिन लोगों ने पत्र लिखकर इस परियोजना को लेकर कोर्ट के फैसले पर विचार करने की बात कही है, उनमें डॉ. कर्ण सिंह, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, कुंवर रेवती रमण सिंह, के एन गोविन्दाचार्य, प्रो. शेखर पाठक, रामचन्द्र गुहा, सांसद रंजीत रंजन, उज्ज्वल रमन लसह जैसे नाम शामिल हैं. मुरली मनोहर जोशी ने मुख्य न्यायाधीश को लिखे अपने पत्र में कोर्ट के उस आदेश का जिक्र किया है अब तक किसी भी स्टडी में यह वैज्ञानिक आधार पर साबित नहीं हुआ है कि चार धाम प्रोजेक्ट की वजह से उत्तराखण्ड में लैंडस्लाइड या बाढ़ जैसी आपदाएं आईं। गौरतलब है कि चार धाम परियोजना की सड़कों की चौड़ाई बढ़ाए जाने के मामले में सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हो रही है क्योंकि सिटीज़न्स फॉर ग्रीन दून नाम के एनजीओ ने पर्यावरण सम्बन्धी चिन्ताओं को लेकर इस प्रोजेक्ट के खिलाफ याचिका दायर की थी। आपको याद दिला दें कि इससे पहले राज्यसभा में इसी साल मार्च के महीने में सड़क परिवहन और हाईवे मंत्री नितिन गडकरी ने भी एक लिखित जवाब में कहा था कि 'उत्तराखण्ड सरकार, जिओलॉजिकल सर्वे और डीजीआरई की रिपोर्ट्स के मुताबिक उत्तराखण्ड में बाढ़जनित आपदा का कारण चार धाम प्रोजेक्ट की सड़कों को चौड़ा करना नहीं था। इसमें चारधाम परियोजना के तहत सड़कों के चौड़ीकरण की अनुमति देने की बात कही है। जोशी ने अदालत से अपने पहले के आदेश की समीक्षा करने की मांग की है। इस पत्र में कहा गया है कि इस तरह की स्थिति बेहद खतरनाक है। पत्र में कहा गया है कि हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने हिमाचल प्रदेश में उभरते 'अस्तित्वगत संकट' को स्वीकार किया है। यदि अभी सुधारात्मक कदम नहीं उठाए गए तो पूरे देश को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा।

इस पत्र में विशेष रूप से भागीरथी इको-सेंसिटिव ज़ोन का उल्लेख किया गया है, जो गंगा का उद्गम स्थल है और हाल ही में धराली आपदा जैसी त्रासदियों का सामना कर चुका है। नागरिकों का कहना है कि इस क्षेत्र में 'आरओएमएडी डिज़ाइन से सड़क निर्माण की अनुमति देना जीवन, आजीविका और नदी तंत्र को अपूरणीय क्षति पहुँचा सकता है। पत्र में यह भी स्वीकार किया गया है कि सीमावर्ती क्षेत्रों में रक्षा बलों की आवाजाही के लिए हर मौसम में सम्पर्क मार्ग आवश्यक है। इसके साथ ही जोर दिया गया है कि हिमालय में इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास 'आपदा एवं जलवायु-लचीले दृष्टिकोण' से होना चाहिए, जो भू-भाग की पारिस्थितिक सीमाओं का सम्मान करता हो। नागरिकों ने मुख्य न्यायाधीश से आग्रह किया है कि चारधाम परियोजना के निर्णय की पुन: समीक्षा कर अधिक टिकाऊ ढांचा अपनाया जाए, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा की जरूरतों और पर्यावरण संरक्षण के बीच सन्तुलन स्थापित हो सके मूल मुद्दा प्रणाली की वहन क्षमता है। भारी भूस्खलन, हिमस्खलन और ढलानों के ढहने से लगातार अवरुद्ध होती चौड़ी सड़क, दोहरी मार का कारण बनेगी क्योंकि न केवल सैन्य या हथियारों की आवाजाही में देरी होगी, बल्कि क्षतिग्रस्त सड़क को साफ करने या पुनर्निर्माण के लिए भारी प्रयास की आवश्यकता होगी, चार धाम परियोजना उन सभी पर्यावरणीय मानदण्डों और संरक्षण रणनीतियों का बुनियादी उल्लंघन है जिनका पालन हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में किसी भी निर्माण गतिविधि के लिए आवश्यक है। पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (ईआईए), वन मंज़ूरियों से लेकर परिपत्रों और दस्तावेज़ों को छिपाने तक यह एक अवैज्ञानिक सड़क चौड़ीकरण परियोजना साबित हुई है जिसके विनाशकारी परिणाम होंगे।

धौनी-सीलिंग मार्ग पर सुधार कार्य

लोहाघाट। धौनी-सीलिंग मोटर मार्ग में 2.41 करोड़ रुपये की लागत से सड़क सुधार कार्य तेजी से प्रगति पर है। यह 5 किमी लम्बा मार्ग क्षेत्रवासियों के लिये महत्वपूर्ण सम्पर्क मार्ग है, डामरीकरण सुविधा जल्द पूरी होगी। अधिशासी अभियन्ता लोनिवि हितेश काण्डपाल ने बताया कि मार्ग में सभी आवश्यक आधारभूत कार्य जैसे कलवट निर्माण, नालिया, पैराफिट आदि पूरे कर लिये गये हैं।

ज्योतिष की बातें- 250

17 अक्टूबर 2025 को सूर्य अपनी नीचराशि तुला में प्रवेश करेगा। वहाँ पर कोई शुभदृष्टि भी नहीं होगी अत: सूर्य अत्यन्त निर्बल रहेगा। फिर भी सूर्य अगले एक माह स्वास्थ्य, सम्मान आदि अपने कारक विषयों में सिंह, वृषभ, मकर व धनु राशि के जातकों को अल्पमात्र में शुभफल प्रदान करेगा। अन्य जातकों को अभी धैर्य रखना चाहिए।

18 अक्टूबर 2025 को गुरु तीव्रगति से चलते हुए शत्रुराशि मिथुन से निकलकर उच्चराशि कर्क में प्रवेश करेगा अत: गुरु अत्यन्त बली होगा इसलिए कुछ समय के लिए शुभफल प्रदान करेगा। गुरु धन-समृद्धि, शालीनता, विवाह, पुत्रलाभ, उच्चशिक्षा, धर्म परायणता, अध्यात्म, संस्कृति आदि का कारक होता है। अत: गुरु अपने कारक विषयों में मिथुन, मीन, मकर वृश्चिक व कन्या राशि के जातकों को अगले 48 दिन अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। अन्य राशियों को भी सामान्य शुभफल प्राप्त होगा।

धनतेरस- कार्तिक कृष्णपक्ष त्रयोदशी प्रदोष व्यापिनी तिथि तदनुसार शनिवार 18 अक्टूबर 2025 को धन त्रयोदशी (धनतेरस) का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन प्रदोषकाल में असामयिक मृत्यु के निवारणार्थ यम निमित्त दीपदान किया जाता है।

धन्वन्तरि जयन्ती- कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी तदनुसार शनिवार 18 अक्टूबर 2025 को आयुर्वेद के प्रवर्तक भगवान धन्वन्तरि का पूजन किया जाएगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 140

व्रत पर्वों की दुविधा

दस पन्द्रह साल पहले तक व्रत-पर्व किसी एक दिन ही मनाए जाते थे। कहीं कोई दुविधा नहीं रहती थी। लेकिन अब सोशल मीडिया के कारण व्रत पर्व दो-दो दिन होने लगे हैं। जब भी कोई पर्व आता है तो उसके पहले सभी प्रचलित पंचाँगों से हटकर त्यौहार की कोई नई तारीख ही निकाल दी जाती है।

इसके निम्न प्रमुख कारण हैं।

1. उदयातिथि वाले नये ज्योतिषी। इनको केवल उदयातिथि का ज्ञान होता है, मुहूर्त ज्योतिष का नहीं। इन्होंने अपना एक नया गुट ही बना लिया है। 2. कुछ ऐसे ज्योतिषी हैं जिनको मुहूर्त का कोई भी ज्ञान नहीं होता है केवल सनसनीखेज ज्योतिषीय पोस्ट को सोशल मीडिया में शेयर करते रहते हैं। 3. कुछ ऐसे ज्योतिषी हैं जिन्हें मुहूर्त का आधा ज्ञान होता है उसी के आधार पर व्रत पर्व की नई तारीख निकाल कर प्रचार कर देते हैं। यह लोग बहुत जिद्दी और घमण्डी होते हैं। ये लोग विद्वान पंचाँगकारों को मूर्ख समझते हैं। ऐसे लोग सोशल मीडिया में हल्ला भी बहुत मचाते हैं। मुख्य रूप से इन्हीं के कारण व्रत-पर्व अब दो-दो दिन होने लगे हैं। 4. जिन्हें मुहूर्त ज्योतिष का सम्पूर्ण ज्ञान होता है वे अपनी बात एक बार कहकर शान्त हो जाते हैं, सोशल मीडिया में हल्ला नहीं मचा पाते।

ऐसी स्थिति में आम जनता भ्रमित हो जाती है कि त्योहार कब मनाया जाए। मेरा आग्रह है कि जब भी कभी इस प्रकार की दुविधा उत्पन्न हो तो व्यक्ति को अपने स्थानीय पंचाँग का अनुसरण करना चाहिए। या फिर अपने खानदानी ज्योतिषी से अथवा अपने पण्डित जी पूछ कर त्योहार मना लेना चाहिए। सोशल मीडिया का कतई भरोसा नहीं करना चाहिए ।

-ओंकार नाथ कोष्टा

25 नवम्बर को बद्रीनाथ, 23 अक्टूबर को केदारनाथ कपाट बन्द होंगे

चमोली। बद्रीनाथ धाम के कपाट इस वर्ष 25 नवम्बर को दोपहर 2.56 बजे बन्द होंगे। दशहरे के दिन बद्रीनाथ के रावल ने कपाट बन्द होने की तिथि की घोषणा की। शीतकाल के लिये चार धामों के कपाट छह महीने के लिए बन्द होंगे।

केदारनाथ धाम के कपाट 23 अक्टूबर को बन्द होंगे। यमुनोत्री धाम के कपाट 23 अक्टूबर और गंगोत्री धाम के कपाट दीवाली के अगले दिन यानी 24 अक्टूबर को बन्द होंगे।

यादें शेष : निडरता व सच के साथी मोहन चन्द्र पन्त

हल्द्वानी। हीरानगर निवासी 91 वर्षीय मोहन चन्द्र पन्त का विगत दिवस निधन हो गया। निडरता व सच के साथी पन्त जी आजीवन जनहित की बातों की अगुवाई के लिये अग्रणीय रहे। मूल रूप से पन्त गाँव रानीखेत के एम.सी.पन्त जंगलात विभाग के धाकड़ अधिकारियों में गिने जाते थे। यूपी के आगरा मेरठ सहित तमाम जगहों वन माफियाओं व गुण्डों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के अलावा उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ने में पन्त जी ने सराहनीय कार्य किया।

सेवानिवृत्त होने के बाद भी रेंजर साहब की ठहक बरकरार थी और वह अनुशासन प्रिय थे। हीरानगर क्षेत्र को हाऊसिंग सोसाइटी का रूप देने के अलावा सामाजिक समरसता के लिये जुटे रहे। पिघलता हिमालय परिवार के वरिष्ठ सहयोगी के रूप में वह समाज हित के कार्यों में निडरता के साथ जूझने वालों में से थे। समाज में उनकी संरक्षक की सी भूमिका थी। उनकी दिनचर्या में शामिल था वह रिक्शे वाले, तांगे वाले, सब्जी वाले, ठेले वाले सभी को जिसने भी अपनी दिक्कत उन्हें बताई उसकी मदद के लिये वह तैयार हो जाते। अपने भरपूरे परिवार को छोड़ वह हमसे विदा हो चुके हैं। पिघलता हिमालय परिवार अपने साथी को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

देवीधुरा किताब कौतिक में किताबों के साथ बहुत कुछ होगा : दयाल

हल्द्वानी। माँ बाराही की पुण्यस्थली देवीधुरा में 1-2-3 नवम्बर 2025 को ऐतिहासिक खोलीखांण, दुबाचौड़ में आयोजित होने जा रहे किताब कौतिक में लगभग 50 हजार किताबों के साथ-साथ स्कूली बच्चों और युवाओं की रचनात्मक अभिरुचि बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न विषयों पर कई कार्यशालाएं भी आयोजित की जाएंगी। इस बार किताब कौतिक की थीम 'धार्मिक और आध्यात्मिक पर्यटन' रखा गया है। 28 अक्टूबर से 1 नवम्बर तक उदय किरौला के निर्देश में बालप्रहरी लेखन कार्यशाला होगी। इसके साथ ही कठपुतली निर्माण, थ्रीडी प्रिन्टिंग, वॉल पेंटिंग, फोटोग्राफी, अभिनय आदि विषयों पर भी विशेषज्ञों द्वारा कार्यशालाएं की जाएंगी। क्रिएटिव उत्तराखण्ड के अध्यक्ष दयाल पाण्डे ने बताया कि राज्य के कई ऐतिहासिक और दूरस्थ कस्बों में 14 सफल आयोजनों के बाद 15 वां आयोजन मन्दिर समिति देवीधुरा के सहयोग से दीपोत्सव के साथ किया जा रहा है। जिसमें देशभर से कई साहित्यकार पहुँचेंगे।

सांसद ने सीएम को पत्र लिखा

नैनीताल। पूर्व केन्द्रीय मंत्री व सांसद अजय भट्ट ने सुशीला तिवारी अस्पताल में निर्माणाधीन कैथ लैब को लेकर मण्डी परिषद पर नाराजी जताई है और सीएम को पत्र लिखा है। कहा कि एमओयू में मेडिकल कालेज प्रबन्धन ने दावा किया था कि डेढ़ वर्ष में लैब को क्रियाशील कर दिया जाएगा लेकिन उक्त कैथ लैब निर्माण कार्य को मण्डी परिषद को सौंपा गया है और कोई सुनवाई नहीं हो रही।

मोतीचूर से गूलर घट्टी तक सड़क

रामनगर। नगर में भवानीगंज में लगने वाले जाम को कम करने के लिये लोनिवि ने मोतीपुर से लेकर गूलरघट्टी तक सड़क निर्माण की योजना बनाई है। इसके माध्यम से काशीपुर की ओर जाने वाले लोग भवानीगंज से गूलरघट्टी मोतीपुर होते हुए पीरूमदारा से गन्तव्य को जाएंगे। 12 किमी की इस रोड निर्माण को शासन की मंजूरी मिलते ही डामरीकरण हो जायेगा।

आश्वासन मिलते ही प्रदर्शन स्थगित

भीमताल। ग्राम पंचायत जंगलियागाँव में दुर्दशा को प्राप्त मोटर मार्ग से गुस्साए ग्रामीणों ने लोनिवि कार्यालय पर धरना प्रदर्शन की चेतावनी दी थी। इस पर विभागीय अधिकारियों ने सड़क का निरीक्षण कर जल्द सड़क सही करने का आश्वासन दिया है। आश्वासन के बाद ग्रामीणों ने प्रदर्शन स्थगित करत हुए समय से कार्य पूर्ण करने को कहा है।

शिक्षकों ने गोलज्यू दरबार में लगाई अर्जी

अल्मोड़ा। अशासकीय माध्यमिक शिक्षक संघ ने सेवानिवृत्त अशासकीय शिक्षकों के पेंशन प्रकरण मुख्य शिक्षाधिकारी की ओर से अनावश्यक रूप से लम्बित रखने का आरोप लगाते हुए चितई स्थित गोलज्यू दरबार में अर्जी लगाई। संघ के जिलाध्यक्ष हीरा सिंह मेहरा, महेन्द्र चौहान, महेन्द्र मेहरा, ललित मोहन ने कहा कि पेंशन प्रकरणों का शीघ्र समाधान हो।

बिजली चोरी में निलम्बित

देहरादून। गुरुकुल नारसन स्थित बिजली घर से बिजली चोरी, स्मार्ट मीटर में छेड़छाड़ के आरोप में यूपीसीएल मुख्यालय ने जेई और एक प्रभारी अधिशासी अभियन्ता को निलम्बित कर दिया।

लड़ीधुरा महोत्सव में भक्तिपूर्ण माहौल

लोहाघाट। बाराकोट में पूजा-अर्चना के एवं कलस यात्रा के साथ लड़ीधूरा महोत्सव मनाया गया। रामलीला मैदान में हुए आयोजन में पुरोहित सतीश चन्द्र पाण्डेय एवं कैलाश चौबे ने पूजन करवाया। भक्तिपूर्ण माहौल में हुए आयोजन में पारम्परिक झोड़ा गायन भी किया गया।

गंगोलीहाट में शराब का खेल बदस्तूर

गंगोलीहाट। क्षेत्र में शराब का खेल किसी न किसी रूप में पहले से रहा है। कभी शराब बन्दी, कभी शराब तस्करी, कभी शराब चोरी, कभी सप्लाई.....। बहुत बने और बहुत उजड़े हैं इस कारोबार में लेकिन माया महा ठगनि हम जानी।

अब ताजा घटना में छात्र नेता भड़क चुके हैं। बताया जा रहा है कि विदेशी मदिरा की दुकान में काम करने वाले एक व्यक्ति द्वारा शराब की अवैध बिक्री की जा रही थी। इस पर नाराज छात्र संघ के प्रतिनिधियों द्वारा दुकान के समक्ष प्रदर्शन किया गया। उन्होंने आबकारी अधिकारी का पुतला दहन करते हुए मांग की कि ठेकेदार का लाइसेंस रद्द किया जाए और निर्धारित मूल्य पर ही शराब की बिक्री की जाए। महाविद्यालय के छात्र नेता विश्वविद्यालय प्रतिनिधि अभय सिंह परगाई के नेतृत्व में एक पत्र भी छात्र संघ द्वारा निरीक्षक कोतवाली को दिया गया। छात्रों के आन्दोलन को पालिका अध्यक्ष विमल रावल द्वारा समर्थन दिया गया।

इस ताजा मामले के बाद यह तो सिद्ध हो ही गया कि शराब का खेल बदस्तूर जारी है गंगोली में।

चूका(चम्पावत)बनेगा वेडिंग डेस्टिनेशन

चम्पावत। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने जिले की विभिन्न रामलीला मंचन कार्यक्रमों को वर्चुअल सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकार की योजनाओं का लाभ चम्पावत सहित पूरे प्रदेश में पहुँच रहा है। विभिन्न मोटर मार्गों के निर्माण और सुदृढ़ीकरण के साथ ही आम की समस्या हल करने के लिये मल्टीस्टोरी पार्किंग का निर्माण कराया जा रहा है। साहसिक पर्यटन की दृष्टि से असीम सम्भावनाओं वाले चम्पावत में कार्य हो रहे हैं। शारदा कॉरिडोर बनोन की हमारी विस्तृत परियोजना पर कार्य प्रारम्भ हो चुका है। पूर्णागिरी क्षेत्र में स्पिरिचुअल जॉन और ईको टूरिज्म विकसित करने के लिये भी प्रसासरत हैं। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये चूका क्षेत्र को वेडिंग डेस्टिनेशन के रूप में विकसित किया जा रहा है। मानसखण्ड मन्दिर माल मिशन के अन्तर्गत क्षेत्र के विभिन्न मन्दिरों के पुर्नर्निर्माण और सौन्दर्यीकरण कार्यों के साथ ही माँ पूर्णागिरी मन्दिर के लिए रोपवे का निर्माण गतिमान है। यहाँ साहसिक पर्यटन की भी सम्भावनाएं हैं।

तल्ला तोक खतरे में, विस्थापन की मांग

बागेश्वर। कपकोट तहसील में कई जगह मानसून काल में अतिवृष्टि से जो हालात हुए है। उससे वाछम का तल्ला तोक खतरे में है। क्षेत्रवासियों ने विस्थापन की मांग की है। ग्राम की हालत देख लग रहा है जैसे 2013 में कुंवारी में भूस्खलन के बाद हो गया था।

तल्ला तोक में पन्द्रह परिवार रहते हैं। आबादी के नीचे दरक रही पहाड़ी के कारण एकदम खतरा बना हुआ है। प्रशासन ने दस परिवारों के लिये टैन्ट की व्यवस्था की है। एक घन आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त है। अन्य चार भूस्खलन की जद से अभी दूर है। पूरे हालात देख ग्रामीण डरे हैं और शीघ्र विस्थापन की मांग कर रहे हैं।

ग्राम प्रधान दिनेश दानू बताते हैं कि दस परिवारों को गाँव में ही सुरक्षित स्थान पर टैन्ट लगाकर विस्थापन तो किया है लेकिन वहाँ मूलभूत सुविधाएं नहीं होने से कोई रहने को तैयार नहीं है। पॉलीथिन के टैन्ट में हिंसक जानवरों के घुसने का डर है और पालतू जानवरों के रहने की व्यवस्था नहीं हो पाई है। कुछ लोग दूसरों के घरों पर रह रहे हैं। डीएम आशीष भटगांई कहते हैं कि सुरक्षित स्थान चयन कर उन्हें विस्थापित किया जाएगा।

225 साल पुरानी निर्माणी पर संकट

देहरादून। अंग्रेज शासन में वर्ष 1801 में स्थापित की गई ऑर्डिनेंस फैक्ट्री (निर्माणी) संकट के दौर से गुजर रही है। देशभर में 41 निर्माणियों का संचालन होता रहा है जिनमें से 1.45 लाख कर्मचारी हैं। इन निर्माणियों का मुख्यालय कोलकाता के 10 ऑकलैंड रोड पर स्थित है और इनका संचालन डायरेक्टर जनरल ऑर्डिनेंस फैक्ट्री करता है। सरकार ने 2021 में ही इन 41 निर्माणियों को कॉरपोरेशन के रूप में पुनर्गठित कर दिया था और कर्मचारियों को 31 दिसम्बर 2025 तक डेपुटेशन पर रखा गया। अब इस अवधि के समाप्त होने से पहले ही सरकार ने एक समिति गठित कर दी जिससे कर्मचारियों में भविष्य को लेकर गहरी चिन्ता व्याप्त है। कर्मचारी नेता फिरोज खान, गिरीश उप्रेती, कुलदीप कुमार का कहना है कि यदि सरकार ने उनकी मांगों पर शीघ्र ध्यान नहीं दिया तो वे बड़े आन्दोलन का रास्त अपनाएंगे।

9 वीं व 11वीं के पंजीकरण 31 तक

रामनगर/देहरादून। उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद ने शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए कक्षा 9वीं और 11वीं के सभी संस्थागत और व्यक्तिगत छात्रों का ऑनलाइन पंजीकरण अनिवार्य कर दिया है। परिषद ने सभी विद्यालयों को निर्देश दिए हैं कि वह अध्ययनरत शत प्रतिशत छात्रों का पंजीकरण तय समय सीमा के भीतर करा लें।

बोर्ड के सचिव बी.वी.सिमल्टी ने बताया कि वर्ष 2027 में 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षा में शामिल होने वाले ऐसे सभी छात्रों के पंजीकरण अनिवार्य किए गए हैं, जो अभी 9वीं और 11वीं में पढ़ रहे हैं। इस सम्बन्ध में सभी मुख्य शिक्षा अधिकारियों को आदेश दिए गए हैं कि वह 31 अक्टूबर तक छात्रों का पंजीकरण करवा लें। तय तिथि के बाद किसी भी दशा में पंजीकरण शुल्क जमा करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। साथ ही पंजीकरण की तिथि भी नहीं बढ़ाई जाएगी। जो छात्र पिछले साल 9वीं. और 11वीं में थे और इस बार भी उसी कक्षा में पढ़ रहे हैं, उन्हें भी पंजीकरण करवाना होगा।

विभागीय परीक्षा पर शिक्षक संगठन सामने

देहरादून। प्रधानाचार्य सीमित विभागीय परीक्षा पर शिक्षक संगठन आमने सामने हैं। परीक्षा रद्द कर शत प्रतिशत पदोन्नति करने की मांग को लेकर संगठन ने उपवास भी रखा। कहा कि प्रधानाचार्य विभागीय सीधी भर्ती को रद्द कर वार्षिक स्थानान्तरण प्रक्रिया को बहाल किया जाए। दूसरी ओर परीक्षा समर्थक मंच ने प्रधानाचार्य सीमित विभागीय परीक्षा कराने की मांग के लिए सांकेतिक उपवास रखा।

पुरानी पेंशन बहाली पर फैसला हो

देहरादून। राष्ट्रीय पुरानी पेंशन बहाली संयुक्त मोर्चा ने सरकार से पुरानी पेंशन बहाली पर फैसला लेने को कहा है। मोर्चा से जुड़े कर्मचारियों ने एक अक्टूबर 2005 को लागू हुई नई पेंशन योजना को कर्मचारी विरोधी करार देते हुए पुरानी पेंशन बहान किये जाने की मांग की है संगठन के प्रदेश अध्यक्ष जयदीप रावत ने कहा कि पुरानी पेंशन से कम कुछ भी मंजूर नहीं किया जाएगा।

परिक्रमा

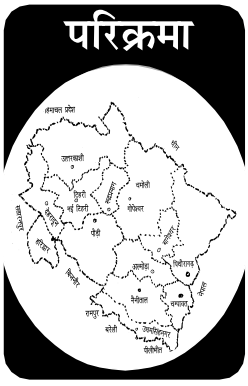

स्याल्दे में पाती मेला, नई फसल का भोग

स्याल्दे। नागचूला खाल में पाती मेले का परम्परागत आयोजन किया गया। जिसमें ग्रामीणों ने माँ भगवती और भूमिया देवता की पूजा अर्चना करते हुए क्षेत्र की खुशहाली की कामना की। इस दौरान खेतों में माता की स्थापना कर नई फसल का भोग लगाया गया। इस अवसर पर झोड़ा चाँचरी के साथ लोक उत्सव का भव्य नजारा देखने को मिला।

रामपुर तिराहा कांड की बरसी पर याद

हल्द्वानी। चिह्नित राज्य आन्दोलनकारी संयुक्त समिति के पदाधिकारियों और सदस्यों ने रामपुर तिराहा काण्ड की बरसी पर शहीद आन्दोलनकारियों को याद करते हुए श्रद्धांजलि दी। कहा कि अभी तक कोई भी सरकार उत्तराखण्ड को शहीदों के सपनों वाले राज्य के रूप में विकसित नहीं कर सकी है। समिति के जिलाध्यक्ष राजेन्द्र सिंह बिष्ट ने कहा कि राज्य निर्माण के बाद भी मुजफ्फर नगर काण्ड के दोषियोंको सजा नहीं मिल पाना दुर्भाग्यपूर्ण है। उक्रान्द ने भी धरना देकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

विदुर की वाणी.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

कारण विदुर की राय को न मानने में धृतराष्ट्र हमेशा स्वतंत्र था। पर अपनी राय न माने जाने की परवाह न कर विदुर ने अपने बड़े भाई महाराज धृतराष्ट्र को हमेशा ठीक और दो-टूक सलाह दी। विडम्बना देखिए कि जब धृतराष्ट्र की राजसभा में जुआ खेला जाना प्रारम्भ हुआ तो राजा की आज्ञा से विदुर ही युधिष्ठिर को जुए का निमन्त्रण देने गए, पर जुआ खेले जाने के दौरान ही विदुर ने जिस दबंग तरीके से जुए का विरोध किया और दुर्योधन के चरित्र का पर्दाफाश किया, वह एक साहसी मन्त्री के ही बस का काम था। तब विदुर ने दुर्योधन को कौवा और गीदड़ तक कह दिया और धृतराष्ट्र को चेताया कि दुर्योधन के रूप में एक कौवा और एक गीदड़ उनके कुल का विनाश करने को पैदा हुआ है। दुर्योधन का परित्याग कर देने की सलाह देते हुए विदुर ने धृतराष्ट्र को वह श्लोक सुनाया, जो भारत के राजनीति शास्त्र का बड़ा ही लोकप्रिय कथन बन गया था- त्यजेत कुलार्थे पुरुषम्। ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्। ग्रामं जनपदस्यार्थे। आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्। अर्थात् एक व्यक्ति का बलिदान देकर भी कुल को बचाना चाहिए, कुल का बलिदान देकर भी ग्राम को बचाना चाहिए, ग्राम की बलि चढ़ाकर भी राज्य बचा लेना चाहिए और खुद को बचाने के लिए राज्य का भी बलिदान कर देना चाहिए। पर धृतराष्ट्र ने दुर्योधन नामक व्यक्ति का बलिदान नहीं किया और अन्ततः राज्य से हाथ धोने पड़े। तभी जुए के दौर में ही विदुर ने चेतावनी दी दी थी कि आज जिसे विनोद माना जा रहा है, कल को इसी में से युद्ध की उत्पत्ति होने वाली है।

परन्तु विदुर की न धृतराष्ट्र ने सुनी और दुर्योधन ने। विदुर की बात को तक भी कहाँ सुना गया, जब भारी राजसभा में द्रौपदी को निर्वस्त्र किया जा रहा था और विदुर हर कुछ क्षणों के बाद पूरी सभा को बार-बार इस कुकृत्य के भयानक दुष्परिणामों की चेतावनी दे रहे थे। ये तमाम घटनाएँ तो बाद की हैं। पाण्डवों के जन्मकाल से ही विदुर का स्नेह इन पितृ विहीन बालकों से हो गया था और उन्होंने बार-बार धृतराष्ट्र को समझाया कि पाण्डवों को उनका न्यायोचित हिस्सा मिलना ही चाहिए। जब दुर्योधन ने भीम को पानी में फिकवा दिया था तो विदुर ने ही कुन्ती को ढांढस बंधाया था। जब दुर्योधन ने वारणावत के लाक्षागृह में पाण्डवों को उनकी माँ कुन्ती के सहित जला देने की योजना बनाई तो विदुर ने ही इस पूरे षड्यन्त्र का पता युधिष्ठिर को भरी राजसभा में एक ऐसी भाषा के माध्यम से दे दिया, जो सिर्फ विदुर और युधिष्ठिर ही जानते थे।

यानी नीति-उपदेश और कर्म के क्षेत्र में इतने सारे काम विदुर ने किए। विदुर के इन्हीं महान नीति-वाक्यों और कामों के कारण व्यास ने उन्हें महाभारत में महात्मा विदुर बार-बार कहा है। विदुर की नीतिमत्ता इतनी प्रमाणिक थी कि महाभारत में उपलब्ध उन्हीं के कथनों के आधार पर आगे चलकर 'विदुर नीति' नामक प्रसिद्ध अर्थशास्त्र ग्रन्थ चलन में आ गया। जब कृष्ण युद्ध टालने का एक आखिरी प्रयास करते हुए युधिष्ठिर के दूत बनकर धृतराष्ट्र से मिलने आए तो धृतराष्ट्र के पाँवों तले से खिसकने लगी। घबराहट के मारे उसने विदुर से पूरी रात इस बारे में परामर्श किया कि कृष्ण के साथ कैसे बरता जाए। पर धृतराष्ट्र ने विदुर की तब भी कहाँ मानी।

तो स्पष्ट है कि विदुर अपने समय के एक ऐसे नीतिज्ञ थे, जिनके कथनों में नीतिमत्ता है, निर्भीकता है और प्रासंगिकता है। जिस समय जो कहना चाहिए, वह विदुर ने कहा और ठीक उसी आधार पर उनका नाम देश के महान राजनीतिवेत्ताओं में आ गया। फिर क्या कारण है कि उन्हें वह स्थान और सम्मान नहीं मिल पाया, जो अपने उन्हीं गुणों के कारण कृष्ण को मिला?

यहाँ कारण स्पष्ट है। स्पष्ट, निर्भीक और प्रासंगिक कथन में विदुर कृष्ण से किसी भी तरह से कम नहीं ठहरते। पर जहाँ विदुर पीछे रह गए और कृष्ण आगे निकल गए, वह क्षेत्र कर्म का है। विदुर आजीवन सक्रिय तो रहे, पर विदुर के किसी कथन के पीछे कर्म का ठोस समर्थन नहीं है, जबकि कृष्ण का कोई भी कथन बिना कर्म के समर्थन के है ही नहीं। मसलन विदुर ने कहा कि जुआ नहीं खेला जाना चाहिए, पर जुआ खेला गया और विदुर कुछ नहीं कर पाए। विदुर ने कहा द्रौपदी का चीरहरण नहीं होना चाहिए पर चीरहरण हुआ और विदुर कुछ नहीं कर पाए। विदुर ने कहा कि कृष्ण शान्तिदूत बन कर आ रहे हैं, उनका सम्मान करना चाहिए। पर दुर्योधन ने कृष्ण को गिरफ्तार कर लेना चाहा और विदुर कुछ नहीं कर पाए। पर कृष्ण? हर मौके पर कृष्ण ने कहा भी और कर भी दिखाया। जरासन्ध को मरवा दिया। शिशुपाल को खुद ही मार दिया। दुर्योधन ने गिरफ्तार करना चाहा तो उसे ऐसा हड़का दिया कि वह बेचारा हाथ्ज्ञ जोड़कर खड़ा हो गया। दुर्योधन बिना युद्ध के पाण्डवों को सुई भर जमीन देने को भी तैयार नहीं हुआ तो कृष्ण ने युद्ध ही करवा डाला। अर्जुन थोड़ा बिदकने लगा तो उसे गीता सुना दी और युद्ध में भी लगा दिया। और फिर? यही कृष्ण थे, जो कौरवपक्ष के तीन धुरन्धरों- भीष्म, द्रोण ओर कर्ण की मृत्यु का कारण बने।

बस, यही फर्क था विदुर और कृष्ण में। दोनों नीतिज्ञ थे, पर कृष्ण की नीति को कर्म का बल प्राप्त था, जिसके दर्शन हमे विदुर के जीवन में नहीं होते। इसलिए कृष्ण पूर्णावतार हो गए, जबकि विदुर का महत्व महान नीति शास्त्रकार के दायरे में जा सिमटा। पर चूंकि वे पूर्णावतार नहीं बन सके तो क्या विदुर का महत्व कम मान लिया जाए? ऐसा भला कैसे हो सकता। पूर्णावतार तो कोई विरला ह होता है। पर देश की सभ्यता के विकास में योगदान तो विदुर जैसे का भी होता है, जिन्होंने भारत को भीष्म के समकक्ष एक नीतिशास्त्र दे दिया।

(साभार नवभारत टाइम्स)

पहली बार परफारमेंस आडिट शुरू

एक्शन के बिना क्या फायदा

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड के विभिन्न विभागों में पहली बार परफारमेंस आडिट शुरु हो गया है। विभिन्न विभागों के अन्तर्गत संचालित 30 योजनाओं और कार्यक्रमों को परफारमेंस आडिट हेतु नमूने के रुप में चिन्हित किया गया है। 27 सितम्बर से शुरु इस कार्य के लिए 30 आडिट टीम तैनात की गई हैं। प्रत्येक योजना के आडिट हेतु 30 दिन आवंटित किये गये हैं। सेवानिवृत्त सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी रमेश चन्द्र पाण्डे ने कहा कि परफारमेंस आडिट मैनुअल 2024 के तहत राज्य में पहली मर्तबा हो रहे परफारमेंस आडिट से न केवल तमाम योजनाओं की धरातलीय स्थिति उजागर होगी बल्कि योजनाओं के उद्देश्य को शतप्रतिशत हासिल करने के लिए आडिट द्वारा दिये जाने वाले सुझाव भी महत्वपूर्ण साबित होंगें।

परफारमेंस आडिट हेतु सैम्पल के रूप में चिन्हित 30 योजनाओं में मुख्यमंत्री बाल पोषण, उत्तराखण्ड पावर कार्पोरेशन में वितरण परियोजना हेतु निवेश, शिक्षा के अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत प्रतिपूर्ति, जिला योजना देहरादून के क्रियान्वयन हेतु एकमुश्त व्यवस्था, हाउस ऑफ हिमालयाज, अटल आयुष्मान योजना- गोल्डन कार्ड, नन्दा गौरा योजना, दीनदयाल उपाध्याय सहकारिता किसान कल्याण योजना, युवा कल्याण विभाग द्वाराखेल महाकुम्भ का आयोजन, हैल्थ सिस्टम परियोजना,अंत्योदय राशन कार्ड धारकों को सस्ती दर पर नमक उपलब्ध कराना,साईलेज एवं दुधारु पशु पोषण योजना, ग्रामीण उधम वेगबृद्धि परियोजना, कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों हेतु निःशुल्क जूता एवं बैग की व्यवस्था, प्रदेश के सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यमों की सहायता योजना, पुलों का निर्माण एवं सुदृढीकरण, माध्यमिक शिक्षा के उत्कृष्ट क्लस्टर विध्द्यालय, उत्तराखण्ड अधीनस्थ चयन बोर्ड में अधिप्राप्ति सम्बन्धी प्रकरण, निर्धन परिवारों हेतु रसोई गैस पर अनुदान, सड़क सुरक्षा योजना, गो सदन ग्राम्य गो सेवक योजना का संचालन, बस अड्डों का निर्माण, फिल्म विकास परिषद, क्षतिपूरक बनीकरण योजना, मलिन बस्ती विकास/नगरीय अवस्थापना सुविधाओं का विकास, इन्फ्रास्ट्रक्चर फैसिलिटी फार जूडिसियरी, ग्रामीण व्यवसाय इनक्यूबेटर, उत्तराखण्ड डिजास्टर प्रियेबार्डनैस एवं रैजिलियेन्स परियोजना, राज्य में चाय विकास परियोजना, दुग्ध उत्पादकों को दुग्ध मूल्य प्रोत्साहन योजना सम्मिलित हैं ।

सेवानिवृत्त सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी रमेश चन्द्र पाण्डे के अनुसार परफारमेंस आडिट की पहल तो सराहनीय है ही लेकिन अब तक की विभिन्न विभागों की करोड़ो की गड्बड़ी वाली आडिट रिपोर्ट में एक्शन नहीं लिया जाना निराशाजनक रहा है।

वर्षो से फाइलों में धूल फांक रही करोड़ो की धनराशि की गड्बड़ी वाली स्पेशल आडिट रिपोर्ट की आपत्तियों का परिपालन नहीं होने से जहाँ एक ओर सरकार के जीरो टालरेंस के दांवो पर सवाल उठ रहे हैं वहीं दूसरी ओर आम प्रतिक्रिया ये भी सुनने को मिल रही है कि जब आडिट आपत्तियों में एक्शन ही नहीं लेना है तो ऐसे आडिट से क्या फायदा?

रुद्रपुर में बन रहा है मॉडल वृद्धाश्रम

देहरादून। हिमालयन सांस्कृतिक केन्द्र नींबूवाला में अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर राज्यस्तरीय कार्यक्रम में सीएम ने बताया कि रुद्रपुर में मॉडल वृद्धाश्रम का निर्माण किया जा रहा है। साथ ही 150 मास्टर ट्रेनर तैयार किए जा रहे हैं।

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न.
8958525979,
9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
फोन सम्पर्क-
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स 05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पहाड़ फिर वहीं लेकिन सवालों का.......

कब तक सहन करते रहेंगे : धर्मशक्तू

मुनस्यारी। मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू जोहार के दूरस्थ ग्रामों का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि सरकार चाहे जिसकी हो उन्हें तो उपेक्षा के सिवा कुछ नहीं मिला। आंखिर सीमान्तवासी यह सब कब तक सहन करते रहेंगे। मूलभूत समस्याओं के लिये जूझ रही जनता को हमेशा आश्वासन की घुट्टी पिला दी जाती है।

सरकार गिना रही है अपनी उपलब्धियां

विपक्ष कह रहा- फेल है सरकार

भाजपा संगठन लगा रहा है गणित

कांग्रेस संगठन लगा है निगरानी में

युवाओं पर सबकी नज़र

चौंकाने वाला गणित बनता जा रहा है

नाग भूमि में अन्याय नहीं होने देंगे : पन्त

बेरीनाग। पूर्व पालिकाध्यक्ष हेम चन्द्र पन्त लगातार क्षेत्र की समस्याओं को लेकर आवाज उठाते रहे हैं। उनका कहना है कि पर्यटन विकास की बात कही जा रही है लेकिन अभी तक आधा-अधूरा दिखाई दे रहा है। नाग भूमि को संवारने के लिये बराबर मांग की जाएगी और अन्याय नहीं होने देंगे। नगर पालिका द्वारा इस दिशा में कदम उठाए जा रहे हैं।

प्रथम पृष्ठ का शेष

के घाव भरे जा रहे हैं लेकिन आक्रामक राजनीति की नीयत कुछ और ही कह रही है। अपनी ही बात को सत्य साबित करने की जिद ने आम जनता को बेचैन कर दिया है। कहना गलत नहीं होगा कि पहाड़ फिर वहीं लेकिन सवालों का सैलाब कि सब गोटी फिट कर रहे हैं। पहले होता यह था कि आम जनता को चुनाव के दिनों में ही चुनाव गणित पढ़ाया जाता था और वह अपने अनुसार उसी समय समझने लगती थी परन्तु अब समय से पहले पहले समझने-समझाने के अलावा अनुमान लगाए जाने लगे हैं। यही कारण है कि किसी भी घटना या आयोजन को 2027 के विधानसभा चुनाव के साथ जोड़कर देखा जा रहा है।

सरकार लगातार अपनी उपलब्धियां गिना रही है। सरकारी घोषणाओं के अलावा मंत्रियों के होने वाले दौरों से बराबर यह बताने की कोशिश है कि विकास के लिये बहुत सजगता है। प्रशासन भी पूरी तरह उन बातों को दोहरा रहा है कि माननीय के निर्देशानुसार अमुक स्थान पर अमुक कार्य हो रहे हैं। दूसरी ओर विपक्ष बार-बार दोहरा रहा है कि सरकार फेल हो चुकी है। भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, पेपर लीक से लेकर तमाम आरोप लगाए जा रहे हैं। आरोप-प्रत्यारोप की बातों के अलावा सबका जोर युवाओं की ओर है ताकि युवा शक्ति को अपने पक्ष में कर सकें।

पर्वतीय प्रदेश में जिस प्रकार से युवा शक्ति बीच-बीच में अपनी ताकत दिखा रही है उसे देख यह लगने लगा है कि 2027 के लिये चौंकाने वाला गणित बनता जा रहा है। इन हालातों को कुशल राजनीतिकार समझ भी रहे हैं। यही कारण है कि सीएम पुष्कर सिंह धामी ने युवाओं के आन्दोलन में जाकर सीबीआई जाँच की मांग को माना और हर प्रकार से सहयोग की बात कही। कुशल रणनीतिकार की तरह धामी हर मोर्चे पर चौकस हैं, जिससे कि भाजपा के तमाम नेता उनके पीछे हैं। इसी प्रकार कांग्रेस ने युवाओं को साधते हुए हरदा, हरक सिंह, करन महरा, यशपाल आर्या ने सीधे सम्वाद किया है।

सही बात है कि सबको अपनी गोटी की चिन्ता है। भाजपा संगठन गणित लगाने लगा है कि 2027 में किस प्रकार से तैयारी करनी है। इसके लिये वह पूरी तरह शक्ति लगा चुका है। इस बार कांग्रेस की धार भी तेज दिखाई दे रही है। पार्टी संगठन निगरानी में है कि किस प्रकार से उसे मौका मिले। भाजपा-कांग्रेस के इस अभियान में तीसरी ताकत सिर्फ यूकेडी दिखाई दे रही है, उसमें भी युवा और निर्दलीय योग बना तो कुछ सीटों पर उलटफेर जरूर हो जाएगा। चाहे जो कुछ हो, पहाड़ तो वहीं हैं- हमेशा की तरह आपदा की मार झेलने को तैयार।

दीपावली एवं हरिप्रदर्शनी की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

नारायण सिंह बोहरा

कांग्रेस नगर अध्यक्ष गंगोलीहाट

बोहरा बुक डिपो, चामुण्डा रोड

न तेरा न मेरा Thats

APNA GHAR चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

मो.- 9458920379, 6396098804

YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

दीपावली एवं हरिप्रदर्शनी की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

एम. एस. जंगपांगी

वृन्दावन विहार मल्ली बमौरी हल्द्वानी

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे

धरमघर/चकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

www.mountainheights.in

मो. 9760007148

Hayat Paradise

Bus Station Munsiari

Ph. 09411556700, 9997733070

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल

9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)